आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 5/अंक 3/अगस्त 2025

Received: 14/04/2025; Accepted: 21/04/2025; Published: 28/08/2025

लेख

पानी बचाओ! पानी का हम सदुपयोग करे

उत्सव जैन

कवि एवं साहित्यकार

मुबागीदौरा .नौगामा तह .पो.

जिला बांसवाडा (राज)327603

मो .9460021783

उत्सव जैन, पानी बचाओ! पानी का हम सदुपयोग करे आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 5/अंक 3/अगस्त 2025**,(190 -194) https://doi.org/10.5281/zenodo.17072649

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

पर्यावरण प्रेमियों,

वर्तमान में पानी का संकट पूरे विश्व में देखने को मिल रहा है। उसके मुख्य कारण : जनसंख्या वृद्धि, पानी का उपयोग ज्यादा, पानी की आवक कम, बड़ेबड़े कारखानों-, यंत्र उपकरण संचालित में पानी कीा मात्रा का उपयोग ज्यादा होने से पानी का संकट, कल्लखानों में पानी की मात्रा का उपयोग से भी पानी का संकट तथा प्रकृति को दोहन एवं प्राकृतिक प्रकोपो से आये दिन संकट के बादल मण्डराते रहते है।

अतः वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए अब पानी का संरक्षण बचाव, सदुपयोग से पानी की समस्या का हल संभव है। तो आईये हम इसको पढ़कर आज ही इस कार्य में जुट जाये तो सभी को जीवनदान मिल सकता है और यह सब भागीरथ प्रयास से ही संभव है। इस आलेख पर चिन्तन करंे।

तालाब

प्राचीन काल में नदी, तालाब के पास पूरे गांव बसते थे। कई बार संयुक्त परिवार नदी के तट के पास वृक्ष की छाया में तालाब के निकट बस कर अपना जीवन यापन किया है। आज भी इतिहास के पन्ने बताते है। मोहन

जोदडो सिन्धु हड़प्पा तथा आर्य नदी किनारे बसे। जो संस्कृति वहा से हमंे मिली। तो यह सत्य है कि जीवन चलाने के लिये हवा, पानी, धूप, भोजन की अति आवश्यकता है। क्योंकि कोई भी गावं की तरक्की नदी तालाब भरे रहने से होगी। पानी का उपयोग कृषि के लिये पीने के लिये तथा जल काय के जीव पानी में रहेगें। तो मेरा कहना कि वर्तमान मंे भौतिक संसाधन तथा भौतिक सुख सुविधाऐं यंत्र उपकरण साधन मानव ने बना दिये। लेकिन जीने के लिये आवश्यक शुद्ध हवा, शुद्ध पानी, शुद्ध प्रकाश, शुद्ध अन्न तथा शुद्ध पेय पदार्थ नही होगे तो हमारी अल्पआयु भी हम पूरी नही कर पायेगें। इसलिये वर्तमान में जल संग्रहण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाकर जीविकोपार्जन के लिये प्रत्येक गांव के पास पर्याप्त जमीन पर तालाब निर्माण अति आवश्यक है। यदि गांव के सन्निकट तालाब होगा तो उस तालाब में वायुकॉय, जल कॉय, पृथ्वी कॉय के जीव पानी पी सकेगे। साथ ही गंाव के खेत लह लहाने लगेगें। कृषि उत्पादन में बढ़ोत्तरी होगी। लोगों को रोजगार मिलेगा तथा गांव का विकास होगा। वर्तमान में बेरोजगारी चरम सीमा पर है। मै तो कहता हूँ कि पढ़े लिखे युवक बयुवती यदि ताला-निर्माण मंे हाथ बढ़ायंे तो वह दिन दूर नही कि हम पुनः घी दूध की नदिया देख सके। गांव के निकट तालाब होने से वृक्षारोपण, फल, सब्जियों का उत्पादन कर गांव में सब्जी मण्डी का रोजगार ताजा फल तथा शुद्ध जल मिलने से रोग कम होगंे। अतः एक तालाब से अनेक फायदे है। ऐसे वृक्ष जो लघुवन, उपज तथा फलो वाले वृक्ष से आमदनी होने से गांव का विकास होगा एवं अनाज उत्पादन में बढोतरी से भूखमरी कम होगी। लोग आत्मनिर्भर बनेगें। रोजगार के लिये दरदर की - ठोकरे खानी नहीं पड़ेगी। अतः वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए प्रत्येक गांव, नगर शहर के सन्निकट तालाब निर्माण करने से गांव नगर शहर खुशहाल नजर आयेगा।

प्राचीन समय में राजा महाराजाओं की दूर दृष्टि देखने से आश्चर्य होता है कि प्रत्येक गांव में तालाब निर्माण का कार्य तथा बावड़ीयां, कुण्ड का निर्माण करवाया। आज भी पढ़ने को मिलता है कि राजा ने तालाब का निर्माण करवाया, सीताकुण्ड, बावडिया प्राचीन देखने लायक है। उसमें ठण्डा एवं शुद्ध पानी रहता था जो पूरा गांव बावड़ियों पर पनिहारी, पानी भरती थी। पशुपक्षीयों के लिये बैलगाड़ी-, झड़स, बाल्टियों से गहरे कुंओ से पानी लाकर पिलाया जाता था। मेहमानों को शुद्ध बर्तन से शुद्ध पानी सन्निकट बावड़ी से लाकर पिलाया जाता था। इससे बिमारियों पर नियत्रण रहता था। संयुक्त परिवार रहने से सबका सहयोग स्नहे से जीवनयापन में पानी की मात्रा गांव में अधिक रहने से खुशहाल रहते थे। यह पद्धति आज की पानी संकट को देखते हुए जल संग्रहण अतिआवश्यक है। वर्तमान में जल का जो दुरूप्योग हो रहा है। उस पर कड़ा कानून, जनजागृति से पानी के उपयोग एवं जल संग्रहण का बीड़ा उठाकर युवा पीढी को साथ लेकर प्रत्येक गांव, ढाणी, नगर, शहर में तालाब निर्माण का कार्य अति आवश्यक है।

रचना तालाब -

मेरे गांव का तालाब कभी,

खाली नही होता।

पशुपक्षी पीते पानी-,

खेती से सबको लाभ मिलता।।1।।

दूर दृष्टि से सोचा होगा पूर्वजो ने,

गांव का भला एक तालाब से होता।

मेरे गांव में कभी अकाल नही पड़ा,

क्योंकि तालाब सदा लबालब भर रहता।।2।।

कृषि उत्पादन में हुई बढ़ोतरी,

किसान के घर पैसा कम नही पड़ता।

मेरे गांव का तालाब कभी,

खाली नही होता।।3।।

आईये गांव छोटा है दिल बड़ा है,

तालाब में नहाने का मन सबका होता।

हरि भरी धरती दिखती गांव की,

गांव के सन्निकट तालाब दिखता।।4।।

धार्मिक कार्य तालाब के निकट होते,

मेले त्यौहार वर्षाकाल का नजारा अलग दिखता।

कुछ लोग तालाब में नहाते,

कुछ पशुआंे को पानी का आनन्द अलग मिलता।।5।।

कलरव कलरव करते पक्षी,

तालाब के किनारे पर चहल पहस सा रहता।

बच्चे माँ से बिछूड कर,

तालाब में नहाते आनन्द आता।।6।।

नहाने के बाद तरोताजा हो जाता दिमाग,

तालाब का पानी शुद्ध होता।

मेढक, मगर मच्छ मछलियाँ,

केकडे, कछुआ कौन दिखाता।।7।।

गांव में एक तालाब,

कितनी प्रजातियों को पालता।

समझो प्यारे यही तालाब,

कितने प्राणियों को खुशी देता।।8।।

इसलिये गांव के पास तालाब,

सबको सुख सुविधा देता।

प्यासों की प्यास बुझाता,

संकट में तालाब का पानी काम आता।।9।।

गांव में आंग लगने पर,

यही तालाब का पानी आग बुझाता।

'उत्सव जैन' कहता प्यारे,

एक तालाब कहीं परिवार को खुशहाल करता।।10।।

अन्त में यही कहूँगा कि वर्तमान में जल संकट को देखते हुए प्रत्येक गंाव, ढाणी, नगर, शहर के सन्निकट तालाब निर्माण कर जल संग्रहण से गांव समृद्ध होगा। बेरोजगारी कम होगी। कृषि में बढ़ोतरी होगी। आत्म निर्भर होकर परिवार समाज राष्ट्रहित में कार्य करने की भावना जागृत होगी। सभी काम धन्धे लगेगे तो हमारा अमूल्य समय का सदुपयोग होगा। सभी को काम मिलेगा तथा सभी पशु पक्षीयों को भी आयु में वृद्धि होगी। क्यांेकि 'जल ही जीवन है' और वर्तमान में अतिवृष्टि अनावृश्टि को देखते हुए जल संग्रहण होगा तो हमें अपने गांव की जल आपूर्ति में समस्या नही आयेगी। तालाब होने से गांव की

बावड़ियंा स्वच्छ होगी। शुद्ध पानी मिलेगा। रोग कम होगें तथा सभी प्रकार के जीव रहने से एक दुसरे जीव का शोषण नहीं करेगें। अभी जल संकट से जल में रहने वाले जीव पानी की कमी से मर गये या गांव में आकर हमारे साथ कई प्रकार की समस्याऐं उत्पन्न से आये दिन सुनने पढ़ने में आता है कि पानी नही मिलने से शेर, चीते, गांव में शहर में घुस गये। यदि उन्हें गंाव, नगर, शहर के सन्निकट तालाब में पिने का पानी मिल जाता तो वह प्यासे नही रहते। अतः अब हमें 'पानी बचाओ अभियान' के अन्तर्गत तालाब बावड़ीयों का निर्माण एवं जो तालाब बावड़ियां है उसे रखरखाव तथा शुद्ध जल की व्यवस्था कर इस ओर कदम उठाने से 'वर्तमान सम्भाला तो भविष्य महान है' वरना पानी की एकएक बुंद के लिये हम तरस जायेगें तथा मेरा - मानना है कि अब लड़ाई पानी के लिये लोग प्यासे लड़ेगे। क्योंकि घनघोर जंगल नहीं वृक्ष कम हरियाली कम तो वर्षा कैसे संभव है। पहाड़ मैदान बन रहे पत्थरों की खदाने पानी का बहाव रोक रही सीमित मात्रा में पानी जनसंख्या मंे वृद्धि हो रही जलापूर्ति कहां से होगी। यह सोचने वाली बात है।

जंल संकट को देखते हुए जलसंग्रहण बहुत जरूरी है।

आओ प्यारे सोचे इस पर,

प्रदुषित हो रहा पानी है।

शुद्ध जल नही मिल रहा,

इसमें हमारी हानि है।।

जल संकट वर्तमान में,

अब बचाना केवल पानी है।

जीवनदान सबको मिलेगा,

जल संग्रहण कर मिल जाये बस हमें पानी है।।

****